Swami Vivekananda Advanced Journal for Research and Studies
Online Copy of Document Available on: www.svajrs.com

ISSN:2584-105X **Pg. 20-25**

पर्यावरण सुरक्षा : अवधारणा, समस्या, समाधान

रत्नेश कुमार
शोध छात्र, रक्षा एवम् स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रयागराज
ratneshkumarshukla94@gmail.com

Accepted: 12/12/2025
Published: 17/12/2025 ***DOI: http://doi.org/10.5281/zenodo.17964408***

सारांश

पर्यावरण शब्द "परि" और "आवरण" शब्दों के संयोग से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ है 'जो परितः आवृत्त है। समस्त जीवधारियों के चारों ओर का जो आवरण है उसे पर्यावरण कहते हैं। 18वीं शताब्दी के घटित औद्योगिक क्रान्ति से लेकर 21वीं शताब्दी तक मानव सभ्यता ने अपने प्रगति और विकास के लिए जिस प्रकार से प्राकृतिक संसाधनों का विदोहन किया उसके परिणामस्वरूप आज पृथ्वी का पर्यावरण सन्तुलन विघटन के कगार पर पहुँच गयी है। यह सम्पूर्ण विश्व के पारिस्थितिकी को प्रभावित कर रहा है। 20वीं शताब्दी के अन्तिम दशकों में पर्यावरण क्षरण एवं जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न होने वाली असैनिक समस्याओं ने विश्व के समस्त राष्ट्रों को अपनी ओर आकृष्ट किया तथा पर्यावरणविदों ने अपने चिन्तन द्वारा यह स्पष्ट करने का प्रयास किया कि इन चुनौतियों के सम्मुख राष्ट्र राज्य, राष्ट्रीय सीमायें और भू-भाग संबंधी संप्रभुता जैसी धारणाओं के स्थान पर पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न चुनौतियों ने मानव सभ्यता की उत्तरजीविता पर ही प्रश्नचिन्ह लगा दिया है।

21वीं शताब्दी के दौर में सम्पूर्ण मानव जाति को एक बड़ी चुनौती का सामना करना पड़ रहा है यह चुनौती मानव जाति के अस्तित्व की है। हमारे परिवेश का वातावरण इस प्रकार से रूपान्तरित हो रहा है जो मानव समुदाय के लिए समस्या के रूप में स्थापित हो रहा है। प्राकृतिक संसाधनों में हो रही तेजी से क्षय के साथ मानव जाति आखिर कब तक जीवित रह पायेगी।

शब्द कुंजी: *पर्यावरण सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन, सहस्राब्दि विकास, राष्ट्रीय सुरक्षा, संप्रभुता, भू –राजनीति, पर्यावरणीय संतुलन, ग़रीबी उन्मूलन, वैश्वीकरण, औद्योगिकीकरण*

पर्यावरण सुरक्षा की अवधारणा

पर्यावरण सुरक्षा की अवधारणा को लोकप्रिय बनाने का श्रेय नोबेल पुरस्कार प्राप्त पर्यावरण रासायनविद् पाउल कुर्टजन (Pour Crutarjan) को जाता है जो लंदन की "Geographical Society" द्वारा निर्मित आयोग के अध्ययन से स्पष्ट होता है। प्रकृति और राजनीति के मध्य परस्पर संबंधों की व्याख्या करते हुये सुप्रसिद्ध दार्शनिक और समाजशास्त्री "Burno Laton" ने लिखा है कि "हम प्रकृति में राजनीति करे या राजनीति में प्रकृति को यह प्रश्न विचारणीय हो गया है"।

21वीं शताब्दी के 6वें दशक के अन्तिम वर्षों तथा 7वीं व 8वीं दशक में राष्ट्रीय सुरक्षा की गयात्मक धारणा में बहुत ही महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। जिसमें राष्ट्रीय सुरक्षा को विकास (सामाजिक, आर्थिक व अन्य) से जोड़ा गया और सुरक्षा प्राप्त करने को इसका सर्वश्रेष्ठ माध्यम बताया गया, जिसकी पुष्टी निम्न स्त्रातेजिक विचारकों से होती है।

पर्यावरण सुरक्षा की धारणा का प्रतिपादन 5 जून 1972 में स्टाकहोम सम्मेलन में हुआ। जिसमें विश्व के लगभग सभी राष्ट्रों ने भाग लिया।

पर्यावरण सम्बन्धी आयामों का वैश्विक राजनीति पर पड़ने वाले प्रभावों के संदर्भ में सुप्रसिद्ध राजनीतिक विज्ञानी Thom Kuchls ने अपने मोनोग्राफ "Beyond Sovernent Terriortory" में लिखा है कि वेस्टफालिया कि संधि (1648) के उपरान्त उत्पन्न आधुनिक राष्ट्र राज्य व्यवस्था अपने राजनीतिक, आर्थिक और पारिस्थितिकी गतिविधियों के कारण अब अपनी सम्प्रभुता को और लम्बे समय तक बनाये रखने में विफल हो रहा है तथा पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओं ने आधुनिक राष्ट्र राज्य की सीमाओं तथा उसके भू-भाग संबंधी महत्व संप्रभुता को महत्वहीन कर दिया है तथा पर्यावरण संबंधी आयामों ने राज्यों के मध्य इस समस्या के निदान हेतु परस्पर सहमति और क्रियान्वयन को अनिवार्य बना दिया है।

पर्यावरण सुरक्षा जलवायु सुरक्षा और राष्ट्रीय सुरक्षा सम्प्रभुता के मध्य एक संबंध विकसित हो रहा है जो विगत के भू-राजनीति संबंधी विचारधारा का विरोधी है।

सुप्रसिद्ध पर्यावरणविद् "Simon Dolby"ने अपने हाल में ही लिखे गये निबन्धों में लिखा है कि "राजनीति के परम्परागत घटक जैसे संसाधनों की सुरक्षा भू-भाग पर नियंत्रण के लिए प्रतिस्पर्धा और युद्ध योजनाओं जैसी आयामों पर ऊर्जा सुरक्षा, खाद्य व्यवस्था आधारभूत ढांचा, नगरों का व्यवस्थित विकास इत्यादि आयाम बड़ी तेजी से विश्व राजनीति में अपना महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण कर रहे हैं। जिसके परिणाम स्वरूप पर्यावरण सुरक्षा ग्रीन हाउस जैसे ओजोन परत का संवर्द्धन को वास्तविक धरातल पर ला दिया है"।

रॉबर्ट मैकनमारा के अनुसार "सुरक्षा का अर्थ है विकास, बिना विकास के कोई सुरक्षा संभव नहीं है"।

के० सुब्रमण्यम के अनुसार "राष्ट्रीय सुरक्षा का तात्पर्य केवल क्षेत्रीय अखण्डता की सुरक्षा नहीं वरन् इसका तात्पर्य यह भी सुनिश्चित करता है कि वह देश तीव्र औद्योगिकीकरण की ओर बढ़ रहा है एवं इसके पास एक शक्तिशाली सुसंगठित समतावादी एवं प्रौद्योगिक समाज निर्माण करने की क्षमता हो"।

राष्ट्रीय सुरक्षा पर स्त्रातेजिक चिन्तकों द्वारा इस चिन्तन का व्यापक प्रभाव यह हुआ कि पृथ्वी पर उपस्थित पर्यावरणीय संसाधनों का जो विदोहन और कुप्रभाव औद्योगिक क्रान्ति से 20वीं शताब्दी के 5वें व 6वें दशक में नहीं हुआ वह हाल के कुछ वर्षों में ही अप्रत्याशित ढंग से हो गया। जिसका अनुमान 1968 में विकास पर स्थापित पिपरसन कमीशन की रिपोर्टों से लगाया जा सकता है। जिसके अनुसार "कौन यह कह सकता है कि कुछ दशकों में उसका देश कहा होगा बिना यह पूछे कि विश्व कहा होगा। यदि हम चाहते हैं कि विश्व सुरक्षित तथा समृद्धशाली हो तो हमें लोगों की सामान्य पर्यावरणीय समस्याओं पर ध्यान देना होगा"।

पर्यावरण पर सुरक्षा के लिए विकास में इस दुष्प्रभाव को देखते हुए 1968 में ही UNO के महासभा ने मानव वातावरण पर एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करने का प्रस्ताव पारित किया। जिसके पश्चात् 5 जून से16 जून 1972 को स्टॉकहोम में सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें विकास सुरक्षा और पर्यावरण पर व्यापक परिचर्चा का अभाव रहा। परन्तु तेजी से बढ़ते पर्यावरण सुरक्षा पर चिन्ता ने 3 जून 1972 को रियो-डि-जेनेरियो में पृथ्वी शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया, जिस सम्मेलन का नाम UN Conference on Environment and Development रखा गया और विकास के स्थान पर सम्पोषणीय विकास Sustainable Development की धारणा को आगे बढ़ाते हुए पर्यावरण सुरक्षा पर वर्तमान में भी प्रयास जारी है।

पर्यावरण समस्या:

औद्योगिक क्रांति ने प्रकृति का अधिकाधिक दोहन किया है। औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप पर्यावरणीय प्रदूषण इतना बढ़ चुका है कि प्रकृति का सन्तुलन बिगड़ता जा रहा है। जब पृथ्वी पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हर चीज पर किसी पर्यावरणीय कारक की मात्रा या गुणवत्ता में बदलाव होता है तब पर्यावरणीय समस्या उत्पन्न होती है। विश्व पर्यावरण एवं विकास आयोग की रिपोर्ट के अनुसार जीवाश्मिक ईंधन के दहन से वायुमण्डल में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा बढ़ रही है जो विश्व के तापमान को धीरे-धीरे बढ़ा रही है।

वर्तमान में बहुत सी पर्यावरणीय समस्याएं हमारे वायुमंडल को प्रभावित कर रही हैं। जिसे हम प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से देख सकते है वर्तमान में दुनिया के कुछ सबसे बड़े पर्यावरणीय मुद्दे अम्लीय वर्षा, वायु प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग, खतरनाक अपशिष्ट, ओजोन रिक्तीकरण, धुआं, जल प्रदूषण, भीड़भाड़ और वनआक्षादन आदि हैं। इनका प्रभाव न केवल पर्यावरण के लिए ही, बल्कि पृथ्वी पर मौजूद समस्त जीवों पर पड़ रहा है।

आगामी शताब्दी के आरम्भ में 'ग्रीन हाउस प्रभाव' विश्व के औसत तापमान 'को इतना बढ़ा सकता है कि हमें कृषि उत्पादन के क्षेत्र बदलने पड़ सकते हैं, समुद्री जल-स्तर बढ़कर तटीय नगरों में बाढ़ ला सकते हैं तथा अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर सकती है। यह समस्या विकसित और विकासशील दोनों देशों के समक्ष है यद्यपि उसका स्तर और स्वरूप भिन्न हो सकता है। अतः विश्व के समस्त देशों में जनसाधारण अब पर्यावरण प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों के तीव्र विनाश के प्रति चिन्तित हो गये हैं और पर्यावरण संरक्षण के लिए जन-आन्दोलन विश्व स्तर पर देखे जा सकते हैं। आज प्रत्येक राष्ट्र में पर्यावरण के प्रति जागरूकता विकसित हुई और पर्यावरणीय नीतियों का निर्माण किया गया है।

पर्यावरण सुरक्षा के क्षेत्र में किए गए प्रयास:

पर्यावरण सुरक्षा को बनाये रखने के लिए निम्न प्रयास किये गये हैं:- पर्यावरण सुरक्षा के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर अनेक प्रयास किए गए हैं, जिनका उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखना और सतत विकास को प्रोत्साहित करना है। औद्योगीकरण, शहरीकरण और बढ़ते प्रदूषण के कारण पर्यावरणीय समस्याएँ गहराती जा रही हैं, जिससे जैव विविधता का ह्रास, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदाएँ बढ़ रही हैं। इस संकट से निपटने के लिए अंतरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर कई संधियाँ, नीतियाँ और कार्यक्रम लागू किए गए हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा जलवायु परिवर्तन पर पेरिस समझौता, क्योटो प्रोटोकॉल और सतत विकास लक्ष्य (SDGs) जैसी पहलों को लागू किया गया है, जबकि भारत में पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, जल (प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण) अधिनियम और राष्ट्रीय हरित अधिकरण (NGT) जैसे प्रावधान स्थापित किए गए हैं। साथ ही, वृक्षारोपण, नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देना, प्लास्टिक प्रतिबंध, जैविक खेती और स्वच्छ भारत अभियान जैसी पहलों के माध्यम से भी पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा दिया जा रहा है। सरकारों, गैर-सरकारी संगठनों और आम जनता की सक्रिय भागीदारी के बिना पर्यावरण सुरक्षा संभव नहीं है, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्तर पर सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरुक होकर योगदान देना आवश्यक है। पर्यावरण सुरक्षा को बनाये रखने के लिए निम्न प्रयास किये गये हैं:-

1. **स्टाकहोम सम्मेलन 1972:** सर्वप्रथम 1972 में स्टाकहोम में मानव पर्यावरण पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन के एजेण्डा में रखा गया था तथा बाद में **United Nation Environment Programme (UNEP)** के रूप में वैश्विक पर्यावरण एजेंसी को स्थापित किया गया तथा इस सम्मेलन में एक प्रस्ताव द्वारा 05 जून को पर्यावरण दिवस घोषित कया गया।
   1973 में संयुक्त राष्ट्र ने पश्चिमी अफ्रीका में मरूस्थलीय के विस्तार को घटाने के लिए प्रयासों को बढ़ाने के लिए सूडानो सहेलियन ऑफिस (**UNSO)** की स्थापना की गई।
2. **अर्जेण्टीना में संयुक्त राष्ट्र जल सम्मेलन, 1977:**जल प्रदूषण की समस्या पर सन् 1977 में अर्जेण्टीना में संयुक्त राष्ट्र जल सम्मेलन 1981 से 1990 के दशक को अन्तर्राष्ट्रीय जल आपूर्ति और जल प्रदूषण निवारण दशक के रूप में मानने का निश्चय किया।
3. **नैरोबी घोषणा, 1982:** 10-18 मई 1982 को मानवीय पर्यावरण पर **UNO** के दसवीं वर्षगांठ के लिए नैरोबी में एक सम्मेलन आयोजित किया जिसमें विश्व समुदाय के राज्यों ने स्टाकहोम घोषणा पर आस्था व्यक्त की।
4. **पर्यावरण एवं विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन, जून 1992**:संयुक्त राष्ट्र के महासचिव बुतरस-बुतरस घाली ने 03 जून से 14 जून 1992 को ब्राजील की राजधानी रियो-डी-जेनिरियों में पर्यावरण एवं विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन का उद्घाटन किया। सम्मेलन के महासचिव कनाडा के मैरिस एफ० स्ट्रांग थे। जिसमें 150 से अधिक राष्ट्रीय प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस सम्मेलन में मुख्यतया पृथ्वी के बढ़ते तापमान और जलवायु परिवर्तन के विषय में विचार किया गया था। इसे एजेण्डा-21 के नाम से भी जाना जाता है जिसके अंतर्गत मुख्यतः चार तथ्यों पे ध्यान केंद्रित किया गया था –

   - जैवविविधता का संरक्षण
   - पूंजी स्थानान्तरण को उदार बनाने पर ध्यान देना।
   - सभी के लिए खाद्यान्न, स्वच्छ पेयजल व सामाजिक सुरक्षा को सुनिश्चित करना।
   - विशसशील देशों से संबंधित समस्याएं, गरीबी निवारण और जनसंख्या नियंत्रण के लिए आवश्यक कदम उठाना।
5. पृथ्वी शिखर सम्मेलन ने रियो घोषणापत्र भी तैयार किया, जिसमें राज्यों, सामाजिक क्षेत्रों और व्यक्तियों के बीच सहयोग के माध्यम से नई और न्यायसंगत भागीदारी और विकास पर 27 सिद्धांत थे। वे सतत विकास के लिए मानव की जिम्मेदारी को दर्शाते हैं; राज्यों को अपने पर्यावरण और विकास नीतियों के लिए अपने स्वयं के संसाधनों का उपयोग करने का अधिकार; और गरीबी उन्मूलन और पर्यावरण संरक्षण में राज्य के सहयोग की आवश्यकता। विचार यह था कि राज्यों को पृथ्वी के पारिस्थितिकी तंत्र की अखंडता को संरक्षित, सुरक्षित और बहाल करने के लिए वैश्विक साझेदारी की भावना से कार्य करना चाहिए।
6. ऐतिहासिक रियो सम्मेलन में, 172 देशों(राज्य या सरकार के प्रमुखों द्वारा प्रतिनिधित्व 108) ने भविष्य के विकास के तरीकों का मार्गदर्शन करने के लिए तीन प्रमुख समझौतों को अपनाया: एजेंडा 21, रियो घोषणा, और वन सिद्धांतों का वक्तव्य, दुनिया भर में वनों के स्थायी प्रबंधन को रेखांकित

करने के लिए सिद्धांतों का एक समूह। इसके अलावा, शिखर सम्मेलन में हस्ताक्षर के लिए दो कानूनी रूप से बाध्यकारी उपकरण खोले गए: जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन और जैविक विविधता पर कन्वेंशन। इसके अलावा, मरुस्थलीकरण का मुकाबला करने के कन्वेंशन पर वार्ता शुरू हुई, जिसे अक्टूबर 1994 में हस्ताक्षर के लिए खोला गया और दिसंबर 1996 में लागू हुआ। रियो सम्मेलन अपने आकार और अध्ययन की गई समस्याओं की सीमा के कारण अन्य संयुक्त राष्ट्र सम्मेलनों से अलग था।

7. 1997 में, पर्यावरण को समर्पित महासभा का एक विशेष सत्र , जिसे 'पृथ्वी शिखर सम्मेलन + 5' के रूप में भी जाना जाता है, ने एजेंडा 21 के कार्यान्वयन की जांच की और आगे के कार्यान्वयन के लिए एक कार्यक्रम प्रस्तावित किया तीन साल बाद, 2000 में, मिलेनियम शिखर सम्मेलन ने आठ सहस्राब्दि विकास लक्ष्य (एमडीजी) स्थापित किए।
8. 2002 में जोहान्सबर्ग में सतत विकास पर विश्व शिखर सम्मेलन ने एक नई कार्य योजना को जन्म दिया।
9. 2005, 2008 और 2010 में न्यूयॉर्क में उच्च स्तरीय बैठकों में सहस्राब्दि विकास लक्ष्यों की समीक्षा की गई।
10. इसके बाद 2012 में रियो में सतत विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन हुआ, जिसे रियो + 20 भी कहा जाता है। इस आयोजन के बाद, संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण सभा की स्थापना हुई, जो पर्यावरण पर दुनिया की उच्च-स्तरीय निर्णय लेने वाली संस्था बन गई। पर्यावरण सभा वैश्विक पर्यावरण नीतियों के लिए प्राथमिकताएँ निर्धारित करने और अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण कानून विकसित करने के लिए मिलती है।
11. वर्ष 2013 में, सहस्राब्दि विकास लक्ष्यों को पूरा करने के लिए निर्धारित समय-सीमा से दो वर्ष पूर्व, न्यूयॉर्क में एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें सदस्य देशों ने सितम्बर 2015 में एक उच्च-स्तरीय शिखर सम्मेलन आयोजित करने पर सहमति व्यक्त की, जिसमें नए लक्ष्यों को अपनाया जाएगा, जो सहस्राब्दि विकास लक्ष्यों द्वारा रखी गई नींव पर आधारित होंगे।
12. पर्यावरण सुरक्षा के लिए प्रभावी समाधान बहुआयामी और समन्वित रणनीतियों पर निर्भर करते हैं, जिसमें नीतिगत सुधार, तकनीकी नवाचार, और सामुदायिक सहभागिता प्रमुख भूमिका निभाते हैं। सर्वप्रथम, सरकारों को पर्यावरणीय नियमों को कड़ाई से लागू करना होगा और स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों को प्रोत्साहित करना होगा, जिससे जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता घटे और कार्बन उत्सर्जन में कमी आए। दूसरी ओर, उद्योगों को हरित तकनीकों को अपनाने, अपशिष्ट प्रबंधन सुधारने और संसाधनों के कुशल उपयोग पर ध्यान केंद्रित करना होगा। शहरीकरण और औद्योगीकरण के दुष्प्रभावों को कम करने के लिए टिकाऊ अवसंरचना, हरित भवन निर्माण और सार्वजनिक परिवहन के उपयोग को बढ़ावा देना आवश्यक है। इसके अलावा, समाज में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए शिक्षा और शोध को सशक्त बनाना होगा, जिससे लोग पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार अपनाने के प्रति प्रेरित हों। व्यक्तिगत स्तर पर, ऊर्जा और जल संरक्षण, वृक्षारोपण, प्लास्टिक का न्यूनतम उपयोग, तथा अपशिष्ट पुनर्चक्रण जैसी पहलें भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वैश्विक स्तर पर सहयोग और तकनीकी साझेदारी से नवाचार को गति दी जा सकती है, जिससे जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय संकटों का प्रभावी समाधान संभव हो सकेगा। अतः दीर्घकालिक पर्यावरण सुरक्षा के लिए संतुलित विकास की अवधारणा को अपनाते हुए, नीति निर्माताओं, उद्योगों और नागरिकों को सामूहिक रूप से कार्य करना होगा।

समाधान के प्रयास भी किए गए जो इस प्रकार है-

1. **जलवायु परिवर्तन संधिः** इस संधि में ताप बढ़ाने वाली गैसों के उत्सर्जन को घटाने तथा सामान्य स्तर पर ताप लाने पर संधि की गयी। जिसमें विश्व बैंक की **Global Environment Facility (GEF)** के अंतर्गत उपलब्ध 80 करोड़ पाउंड की धनराशि का इस्तेमाल लक्ष्य की प्राप्ति के लिए करने की बात की गई।
2. **जैव विविधता पर समझौता:** इस समझौते में यह कहा गया कि विकसित देश में उपलब्ध फंड की सहायता दिलाकर विकासशील देशों की जैव विविधता की रक्षा के लिए प्रेरित करें।
3. **रियो घोषणा-पत्रः** इस घोषणा पत्र में पर्यावरण की रक्षा और विकास के लिए27 सिद्धांत है। इस कारण इसका नाम 'अर्थचार्टर' से बदलकर 'रियो डिक्लेशस' कर दिया गया।
4. **एजेंडा-21:**एजेंडा-21 में 40 अध्याय और 80 पृष्ठीय दस्तावेज में समुद्र, तापमान, जैव विविधता पर विचार-विमर्श किये गये।
5. **तीसरी दुनिया की मददः** इसके अंतर्गत एजेंडा 21 को क्रियान्वयन हेतु 350 खरब पाउंड में से विकसित राष्ट्रों को विकासशील देशों को 70 खरब पाउंड देने होंगे इत्यादि।
6. **संयुक्त राष्ट्र पृथ्वी शिखर सम्मेलन न्यूयार्क:** 23-27 जून 1997 को न्यूयार्क में यह सम्मेलन हुआ। जिसकेअंतर्गतवनों, मत्स्य संग्रह, और जैव विविधता पर चर्चा की गई।
7. **ग्लोबल वार्मिंग पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन क्योंटो संधि दिसंबर-1997:**राउल प्रस्ट्राडा की अध्यक्षता में दिसम्बर 1997 में जापान के क्योटों नगर में ग्लोबल वार्मिंग सम्मेलन सम्पन्न हुआ। जिसमें विभिन्न औद्योगिक राष्ट्रों के लिए उत्सर्जन की

अलग-अलग सीमायें निर्धारित की गई हैं। क्योटो संधि के अनुसार उन सब देशों को इस संधि की पुष्टि करनी है जो धरती के वायुमंडल में 55% CO_2 छोड़ते हैं और उन्हें यह मात्रा सन् 2008 से 2012 के बीच घटाकर 5% तक लाना है।

8. **जोहान्सबर्ग में सतत् विकास से सम्बद्ध विश्व शिखर सम्मेलन सितम्बर 2002:**26 अगस्त से 6 सितंबर 2002 तक दक्षिण अफ्रीका के नगर जोहान्सबर्ग में संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रायोजित पृथ्वी सम्मेलन सम्पन्न हुआ। सम्मेलन का मुख्य विषय- "टिकाऊ विकास"। यह शिखर सम्मेलन जो पृथ्वी से सम्बद्ध शिखर सम्मेलन के बाद हुआ से अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को इस बात का मूल्यांकन करने का अवसर मिला कि क्या कार्यसूची-21 में उल्लेखित लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया गया है।
9. **जलवायु परिवर्तन पर कोपहेगन सम्मेलन, दिसम्बर 2009:** 7-18 दिसम्बर 2009 को डेनमार्क की राजधानी कोपहेगन में संयुक्त राष्ट्र का महासम्मेलन सम्पन्न हुआ। जिसमें कोपहेगन समझौते को स्वीकार किया गया।जिसके अंतर्गत वैश्विक औसत तापमान वृद्धि को पूर्व-औद्योगिक स्तरों (1750) से 2 डिग्री सेल्सियस से अधिक नहीं सीमित करने की आवश्यकता की पुष्टि की गई थी। हालांकि, व्यावहारिक रूप से ऐसा कैसे किया जाए, इस पर कोई सहमति नहीं थी। विशेष रूप से, यह ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को सीमित करने पर सहमत होने में विफल रहा और वैश्विक पर्यावरण एजेंसी बनाने का सवाल दरकिनार कर दिया गया।

10. **पेरिस समझौता जलवायु -** पेरिस समझौता जलवायु पर्यावरणकेक्षेत्रमें एक कानूनी रूप से बाध्यकारी अंतरराष्ट्रीय संधि है। इसे 12 दिसंबर 2015 को पेरिस, फ्रांस में संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन (**COP-21)** में 196 देशों द्वारा अपनाया गया था। यह 4 नवंबर 2016 को लागू हुआ।इसका मुख्य लक्ष्य व्यापक रूप से "वैश्विक औसत तापमान में वृद्धि को पूर्व-औद्योगिक स्तरों से 2 डिग्री सेल्सियस से नीचे रखना" और "तापमान वृद्धि को पूर्व-औद्योगिक स्तरों से 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित रखने" के प्रयास करना है। वर्तमान परिदृश्य में, विश्व के बड़े देशों ने इस सदी के अंत तक ग्लोबल वार्मिंग को 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित रखने की आवश्यकता पर बल दिया है।उनका ऐसा मानना है कि जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र के अंतर-सरकारी पैनल ने संकेत दिया है कि 1.5 डिग्री सेल्सियस की सीमा को पार करने से जलवायु परिवर्तन के कहीं अधिक गंभीर प्रभाव सामने आ सकते है। वैश्विक तापमान वृद्धि को 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित रखने के लिए, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को 2025 से पहले चरम पर पहुंचना होगा और 2030 तक 43% कम करना होगा पेरिस समझौता बहुपक्षीय जलवायु परिवर्तन प्रक्रिया में एक मील का पत्थर है, क्योंकि पहली बार एक बाध्यकारी समझौता सभी देशों को जलवायु परिवर्तन से निपटने और इसके प्रभावों के अनुकूल होने के लिए एक साथ लाता है।

निष्कर्ष-

जिस प्रकार राष्ट्रीय सुरक्षा राष्ट्र की उत्तरजीविता को सुनिश्चित करती है ठीक उसी प्रकार पर्यावरणीय सुरक्षा मानव सभ्यता और पृथ्वी पर विद्यमान जीवन की विविधता तथा उत्तरजीविता को निर्धारित करता है। पृथ्वी जिस प्रकार विविध आवरणों से ढ़की हुई है ये आवरण और इसमें होने वाला क्षरण पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व को ही चुनौती दे रही है। परिणामस्वरूप राष्ट्रीय सुरक्षा की धारणा में पर्यावरण सुरक्षा का आयाम राष्ट्र राज्य की सीमाओं से बाधित नहीं है। अतः पर्यावरण न केवल राष्ट्रीय सुरक्षा बल्कि अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा साथ ही साथ मानव सुरक्षा को अपने अंदर समाहित कर लेता है। अतः पर्यावरणीय सुरक्षा विश्व के राष्ट्रों को अपनी राजनैतिक, वैचारिक, आर्थिक सैनिक भतभेदों को भुलाकर राष्ट्रों को एकीकृत करती है तथा इस चुनौती के सर्वश्रेष्ठ खतरों को विश्व समुदाय के सम्मुख प्रस्तुत करती है जहाँ राष्ट्र सुरक्षा संबंधी मतभेदों को भूलकर पर्यावरण की सुरक्षा और उसकी चुनौतियों का सामना करने के लिए संगठित हुये, क्योंकि पर्यावरणीय विघटन के परिणामस्वरूप जिन समस्याओं का जन्म हो रहा है वे समस्यायें सम्पूर्ण विश्व की सुरक्षा को संकटपूर्ण बना रही हैं तथा मानव सभ्यता तथा प्रकृति के लिए विनाशकारी सिद्ध होगी। इसलिये पर्यावरणीय सुरक्षा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा का एक व्यापक घटक के रूप में सामने आयी है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. Richard, Matthew, "Global Environmental Change and Human Security", Explores how environmental changes affect human and national security, MIT Press, A.et al, (2010).
2. Thomas Homer-Dixon, "Environment, Scarcity, and Violence", A foundational text analyzing how environmental stress can lead to conflict, Princeton University Press, (1999).
3. Jon Barnett, "The Meaning of Environmental Security: Ecological Politics and Policy in the New Security Era", Offers theoretical perspectives and policy implications, Zed Books, (2001).
4. Homer-Dixon Thomas F, "Environment, Scarcity, and Violence", Princeton University Press, 1999.
5. Barnett Jon, "The Meaning of Environmental Security: Ecological Politics and Policy in the New Security Era", Zed Books, 2001.

6. Floyd Rita and A. Matthew Richard, "Environmental Security: Approaches and Issues", Routledge Publication, 2013.
7. Matthew Richard A., Barnett Jon, McDonald Bryan, and Brien Karen O, "Global Environmental Change and Human Security", MIT Press, 2010.
8. Global water Security, Intelligence community Assessment, ICA 2012-08, 2 February 2012 at http://www.transboundarywaterorst.edu /publications/publications/ICA/ September 2013).
9. UNDP, "From the MDGs to sustainable Development for all-lessons from 15 years of practice." November 2016.
10. United Nations Conference on Environment and Development (1992).Annexi. Rio declaration on environment & development. Rio- da-Janario, 3-14 June, 1992, Uphan, P (2000).

https://unfccc.int/process-and-meetings/the-paris-agreement

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, conclusions, and opinions expressed in articles published in this journal are exclusively those of the individual author(s) and contributor(s). The publisher and/or editorial team neither endorse nor necessarily share these viewpoints. The publisher and/or editors assume no responsibility or liability for any damage, harm, loss, or injury, whether personal or otherwise, that might occur from the use, interpretation, or reliance upon the information, methods, instructions, or products discussed in the journal's content.

****